गृहं शून्यं सुतां विना

माड्यूल-2

प्रस्तुतकर्ता-
रविकुमार जैन
प्र.स्ना.अध्यापक (चयनमान)
हिंदी /संस्कृत
प.ऊ.के.वि.इंदौर

शालिनी-किमभवत्? भ्रातृजाये? का समस्याऽस्ति?

शालिनी-क्या हुआ? भाभी? क्या समस्या है?

माला-शालिनि! अहम् मासत्रयस्य गर्भं स्वकुक्षौ धारयामि।

माला-शालिनी! तीन मास के गर्भ को अपने पेट में धारण किए हूँ।

तव भ्रातुः आग्रहः अस्ति यत् अहं लिङ्गपरीक्षणं कारयेयम् ।

तुम्हारे भाई की जिद है कि मैं लिंग परीक्षण कराऊँ ।

कुक्षौ कन्याऽस्ति चेत् गर्भं पातयेयम्।

यदि गर्भ (पेट) में कन्या है तो गर्भ को गिरा दूँ ।

अहम् अतीव उद्विग्नाऽस्मि परं तव भ्राता वार्तामेव न शृणोति।

मैं बहुत चिन्तित हूँ, परन्तु तुम्हारे भाई मेरी बात ही नहीं सुनते हैं।

शालिनी-भ्राता एवम् चिन्तायितुमपि कथं प्रभवति?

शालिनी-भाई ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं?

शिशुः कन्याऽस्ति चेत् वधार्हा?

यदि शिशु कन्या है तो वध के (मारने) लायक है?

जघन्यं कृत्यमिदम्।

यह तो जघन्य अपराध (महापाप) है।

त्वम् विरोधं न कृतवती?

तुमने विरोध नहीं किया?

सः तव शरीरे स्थितस्य शिशोः वधार्थं चिन्तयति त्वम् तूष्णीम् तिष्ठसि?

वह तुम्हारे शरीर (पेट) में स्थित शिशु के वध के लिए सोचते हैं, तुम चुप रहती हो?

अधुनैव गृहं चल, नास्ति आवश्यकता लिंगपरीक्षणस्य।

अभी ही घर चलो, लिंग परीक्षण की आवश्यकता नहीं है।

भ्राता यदा गृहम् आगमिष्यति अहम् वार्ता करिष्ये।

भाई जब घर आएँगे तो मैं बात करूंगी।

(संध्याकाले भ्राता आगच्छति ।

(शाम को भैया आते हैं।

हस्तपादादिकं प्रक्षाल्य वस्त्राणि च परिवर्त्य पूजागृह गत्वा दीप प्रज्चालयति

हाथ-पैर आदि को धोकर और कपड़ों को बदलकर पूजाघर में जाकर दीपक जलाते हैं

भवानीस्तुतिं चापि करोति।
और देवी की पूजा भी करते हैं।

तदनन्तरं चायपानार्थम् सर्वेऽपि एकत्रिताः।)
उसके बाद चाय पीने के लिए सभी एक स्थान पर मिलते हैं।)

राकेशः-माले! त्वम् चिकित्सिकां प्रति गतवती आसीः, किम् अकथयत् सा?
राकेश-माला! तुम डॉक्टर के पास गई थी, उन्होंने क्या कहा?

(माला मौनमेवाश्रयति।)
(माली मौन ही धारण किए रहती है।)

तदैव क्रीडन्ती त्रिवर्षीया पुत्री अम्बिका पितुः क्रोडे उपविशति
तभी खेलती हुई तीन साल की बेटी अम्बिका पिता की गोद में बैठ जाती है

तस्मात् चाकलेहं च याचते।

और उनसे चॉकलेट माँगती है।

राकेशः अम्बिकां लालयति,

राकेश अम्बिका को प्यार करता है,

चाकलेहं प्रदाय ताम् क्रोडात् अवतारयति।

चॉकलेट देकर उसे गोद से उतारता है।

पुनः मालां प्रति प्रश्नवाचिका दृष्टि क्षिपति।

फिर माला की ओर प्रश्न सूचक नज़र डालता है।

शालिनी एतत् सर्वं दृष्ट्वा उत्तरं ददाति।)

शालिनी यह सब देखकर उत्तर देती
है।)

शालिनी-भ्रातः! त्वम् किम् ज्ञातुमिच्छसि?

शालिनी-भाई! तुम क्या जानना चाहते हो?

तस्याः कुक्षि पुत्रः अस्ति पुत्री वा?

उसके पेट में पुत्र है अथवा पुत्री?

किमर्थम्?

किसलिए(क्यों)?

षण्मासानन्तरं सर्वं स्पष्ट भविष्यति,

छह महीने के बाद सब स्पष्ट तो जाएगा,

समयात् पूर्वी किमर्थम् अयम् आयासः?

समय से पहले किसलिए यह कोशिश (हो रही है)?

राकेशः-भगिनि, त्वं तु जानासि एव

राकेश-बहन, तुम तो जानती ही हो

अस्माकं गृहे अम्बिका पुत्रीरूपेण अस्त्येव

हमारे घर में अम्बिका पुत्री के रूप में है ही।

अधुना एकस्य पुत्रस्य आवश्यकताऽस्ति तर्हि.....।

अब एक पुत्र की जरूरत है तो.....

शालिनी-तर्हि कुक्षि पुत्री अस्ति चेत् हन्तव्या?

शालिनी- तो यदि गर्भ में बेटी है तो मार देनी चाहिए?

(तीव्रस्वरेण) हत्यायाः पापं कर्तुं प्रवृत्तोऽसि त्वम् !

(तेज़ आवाज़ से) आप हत्या का पाप करने जा रहे हैं!

राकेशः-न, हत्या तु न.....

राकेश-नहीं, हत्या तो नहीं.....।